कैर : कैपेरिस डेसीडुआ इडज्यु.

- कैपेरिस डेसीडुआ इडज्यु. के वानस्पतिक नाम से पहचाने जाने वाला कैर एक सघन शाखाओं, हरी कंटीली टहनियों, सघन गोलाकार और छोटे तने व चिकनी छाल युक्त छोटा वृक्ष या झाड़ी है जो शुष्क एवं अर्द्ध-शुष्क क्षेत्रों में किसान के खेतों की मेड़ों, ओरण, गोचर एवं परती भूमि पर उगता है। यह राजस्थान एवं पंजाब के शुष्क वनों में भी पाया जाता है।
- कैर 0 डिग्री से 48 डिग्री सेल्सियस तक के तापमान एवं 100-750 मिमी औसत वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में एवं क्षारीय, पथरीली, रेतीली तथा चूने के ढेले युक्त ऐसी मृदाओं जिनका पी.एच. मान 6.5 से 8.5 तक होता है, में आसानी से उगता है। यह भीषण अकाल एवं गर्मी को भी सहन कर लेता है। इसे चलायमान रेतीले टिब्बों तथा जल-भराव वाले क्षेत्रों में पनपने में कठिनाई होती है।
- यह प्राकृतिक रूप से उगता है परंतु इसका कृत्रिम प्रवर्द्धन कठिन होता है। इसका प्राकृतिक रूप से पुनरूद्भवन अधिकांशत: जड़ीय कल्लों (रूट सकर्स) द्वारा होता है।
- वर्षा ऋतु के दौरान लगभग 1-1.5 सेमी मोटी कलमों को इण्डोल ब्यूटायरिक अम्ल हार्मोन 1000 पी.पी.एम. से उपचारित करके पौधे तैयार किए जा सकते है।
- पौधशाला में पौध तैयार करने के लिए जून-जुलाई माह में प्लास्टिक थैलियों में 5 मिमी. गहराई तक बीज बुवाई की जाती है। जुलाई माह के अंत तक लगभग 20 सेमी ऊँचा पतला सा तना तैयार हो जाता है जिसके साथ 3-4 अन्य पतली टहनियाँ भी उग जाती है। एक वर्ष तक पौध की देखभाल करना जरूरी होता है। अगले वर्ष मानसून समय में 5X5 मीटर की दूरी पर बनाए गए 2X2X2 फुट के आकार के गड्ढों में 2 तगारी मींगणी खाद व 5 ग्राम फोरेट कीटनाशक की मात्रा मिलाकर पौधों को रोपित किया जाता है।
- पाँच वर्ष की आयु के कैर के एक वृक्ष से प्राकृतिक परिस्थितियों में बिना कोई देखभाल के 2-3 किग्रा तथा 10-12 वर्ष की झाड़ी से 10-15 किग्रा तक कच्चे फल प्राप्त हो जाते है। कच्चे फलों का बाजार भाव 80-100 रू. किग्रा एवं सुखाए हुए फलों का मूल्य 500-800 रू. किग्रा है।
- इसकी लकड़ी का उपयोग कृषि औजारों, गाड़ियों के पहियों तथा तेल मिलों में काम आने वाले औजारों को बनाने में काम लिया जाता है। यह सामान्यत: अच्छी जलाऊ लकड़ी है और इसे मुख्यत: ईटें पकाने में उपयोग करते हैं
- इसकी कोमल शाखाएँ ऊँट और बकरियों का मन पसंद चारा है। इन्हें सूजन तथा जले हुए भाग पर मल्हम के रूप में लगाया जाता है। टहनियों को चबाने से दाँतों के दर्द में फायदा होता है।
- इसकी छाल खाँसी, दमा, सूजन तथा आँतों की कृमि को नष्ट करने में सहायक होती है। इसकी जड़ एवं जड़ की छाल तीखी होती है जिसे वात रोगों तथा अँतरा ज्वर दूर करने में उपयोग किया जाता है।
- फलों का उपयोग सब्जी एवं अचार बनाने में किया जाता हैं। ये पाचक होते हैं तथा हृदय रोगों और पित्त विकारों में लाभप्रद होते हैं। सुखाएं हुए बीज पंचकुटा की सब्जी का प्रमुख अवयव है।

संकलन:

राजेश कुमार गुप्ता एवं
संगीता त्रिपाठी

निदेशक
शुष्क वन अनुसंधान संस्थान
कृषिमण्डी, नया पाली मार्ग, जोधपुर -342 005